कहानी

कहां जाना पड़ेगा



होटल में बैठें लोग आपस में बात कर रहे थे कि रुस-यूक्रेन युद्ध के चार साल हो गए इतने समय तक लड़ते-लड़ते भी इनका मैटर साल्व नहीं हुआ।अब इन दोनों को यूएनओ जाना चाहिए। पास में एक बुजुर्ग कपल बैठा था। वह बोला हमको भी लड़ते लड़ते चालीस साल हो गए हैं भैया ,हमारा मैटर भी अभी तक साल्व नहीं हुआ हमको कहां जाना पड़ेगा?

प्रफुल्ल शुक्ला 'सरकार'
उज्जैन

व्यंग्य

मीठी चीनी कड़वा स्वाद



पुराने पीढ़ी की महिलाएं आज भी आशीर्वाद देती हैं *दूधो नहाओ और पूतो फलो* आज भले ही सीमित परिवारों के संदर्भ में यह आशीर्वचन बेमानी हो गया है । दूध की क्या बात कर रहे हैं अब तो पानी से भी नहाना दूभर हो गया है?, चारों तरफ पानी की कमी की चर्चा अक्सर पूरे वर्ष भर होती रहती है और इस वर्ष तो पानी गिरा ही नहीं लेकिन आजकल शक्कर की चर्चा बड़ी आम है लगभग अब तो शक्कर की भी कमी हो रही है बाबा कबीर दास ने कभी कहा था चींटी ले शक्कर चली हाथी के सिर धूर पर अब लगता है उसकी व्याख्या इस प्रकार से करना होगी हाथी ले शक्कर चले चींटी के पल्ले कंकर* *शक्कर का असली चक्कर* जो बड़े-बड़े व्यापारी हैं अर्थात हाथी हैं उन्होंने दीपावली का त्योहार देखते हुए शक्कर का भाव बढ़ाया है । शक्कर का चक्कर यही है कि यह बड़े-बड़े हाथी व्यापारी सरकार को चक्कर में डाल रहे हैं बेचारी जनता तो चींटी की तरह है अगर उसने थोड़ा भी सर उठाया तो कुचल दिया जाता है क्योंकि आखिर सरकार भी तो इन हाथियों की है चींटी बेचारी क्या करें सर उठा नहीं सकती इसलिए हाथी के आसपास चक्कर लगाती रहती है कि उसे भी थोड़ी सी शक्कर मिल जाए पर हाथी भाई तो हाथ ही नहीं रखने देते सुना है सरकार कई देशों से शक्कर आयत की है चक्कर में है इसमें भी बड़े घोटाले हैं बड़े-बड़े जो अरबपति हैं उन्होंने शक्कर के नाम पर अपने गोदाम में सोना भर लिया है आप तो जानते ही हैं कि सोना आजकल कितना महत्वपूर्ण हो गया है जिनके पास सोना है वह तो आराम से सोता है तो बाकी के लिए सोना हराम उन्हें तो सुबह उठकर शक्कर वाली चाय भी नसीब नहीं होती । क्योंकि शक्कर बिन दीवाली कैसे मनाएं यहां तो गरीब का दीवाला निकल रहा है भाव तो आसमान छू रहें हैं *मेरे जमाने में शक्कर 60 पैसे किलो मिलती थी है आज ? 60 किलो मिल रही है* ये दाम कहीं ज्यादा कहीं कम हो सकते हैं पिछले दिनों जब अच्छी खासी गरमी पड़ रही थी तभी हमारी सरकार ने शक्कर की कीमतें बढ़ने पर चिंता व्यक्त की जो शक्कर ?40 थी वह रु 60 हो गई और अब कहां की चाय? कहां की लस्सी? कहां का शरबत? अब तो हम जो है गन्नै का रस भी मुश्किल हो रहा है फिर भी हमने चाय का समाधान यह निकाला कि यह है कि हम शक्कर का उपयोग नही करेंगे हम चाय की जगह गन्ने का रस पियेंगे । सो शाम को जब मेहमान आए तो मैंनै चाय की जगह गन्ने का रस सर्व किया अच्छा लगा लेकिन बहुत सुंदर में अंदाज में उन्होंने अंग्रेजी में *ष्टड्ढठ्ठ छ्वह्वष्द्ग* बोले अच्छा लगा है लेकिन उन्होंने इस बात को जब दो-तीन बार कहा *कंजूस* तो मेरा माथा ठनकता रहा ! मैंने यह समझ लिया कि यह कि मुझे कंजूस कह रहा है । मैंने पूछ लिया भाई यह कंजूस क्या है तो बोले * *तू कंजूस है तू चाय नहीं पिला सकता मैंने कहा कि चाय में शक्कर होने से शक्कर की बीमारी का चक्कर हो जाता है इसलिए मैंने है गन्ने। के रस को विकल्प के रूप में चुना है शक्कर की चाय पियो डॉक्टर के चक्कर में या डायलिसिस के चक्कर में पड़ो इसलिए मैंने सोचा है कि मैं तो अब इन सब चक्कर में पडता! नहीं मुझे अभी बहुत दिनों तक जीना है शक्कर के चक्कर में पड़ गया तो प्राणांत निश्चित है

राम वल्लभ गुप्त 'इन्दौरी'
इटारसी

दिपावली का अनमोल उपहार



अशोकजी अपनी पत्नी के साथ अपनी रिटायर्ड जिंदगी बहुत हँसी खुशी गुज़ार रहे थे। उनके तीनों बेटे अलग अलग शहरों में अपने अपने परिवारों के साथ उनसे अलग रहते थे। लेकिन अशोकजी नें नियम बना रखा था दीपावली पर उनके तीनों बेटे सपरिवार उनके पास आते थे वो एक सप्ताह कैसे मस्ती में बीत जाता था किसी को कुछ पता ही नही चलता था। कैसे क्या हुआ उनकी खुशियों को जैसे नज़र ही लग गई। अचानक शीलाजी को दिल का दौरा पड़ा एक झटके में उनकी सारी खुशियाँ बिखर गईं। तीनों बेटे दुखद समाचार पाकर दौड़े आए। उनके सब क्रिया कर्म के बाद सब शाम को एकत्रित हो गए। बड़ी बहू ने बात उठाई,बाबूजी,अब आप यहाँ अकेले कैसे रह पाऐंगे आप हमारे साथ चलिऐ नही बहू,अभी यही रहने दो।

यहाँ अपनापन लगता है। बच्चों की गृहस्थी में कहते कहते वो चुप से हो गए। बड़ा बेटा कुछ बोलने को हुआ,पर उन्होंने हाथ के इशारे से उसे चुप कर दिया। बच्चों,अब तुम लोगों की माँ हम सबको छोड़ कर हमेशा के लिए जा चुकी हैं। उनकी कुछ चीजें हैं,वो तुम लोग आपस में बांट लो। हमसे अब उनकी साजसम्हाल नही हो पाएगी। ये कहते हुए अशोकजी अलमारी से कुछ निकाल कर लाए। मखमल के थैले में बहुत सुंदर चाँदी का श्रृंगारदान था। एक बहुत सुंदर सोने के पट्टे वाली पुरानी हाथ की घड़ी थी। सब के सब एक साथ इतनी खूबसूरत चीजों पर लपक से पड़े। छोटा बेटा जोश में बोला,अरे ये घड़ी तो अम्मा सरिता को देना चाहती थी। अशोकजी धीरे से बोले और सब तो मैं तुम लोगों को बराबर से दे ही चुका हूँ।

इन दो चीजों से उन्हें बहुत लगाव था। बेहद चाव से कभी कभी निकाल कर देखती थीं लेकिन अब कैसे उनकी दो चीजों को तुम तीनों में बांटू?सब एक दूसरे का मुँह देखने लगे। तभी मंझला बेटा बड़े संकोच से बोला,ये श्रृंगारदान वो अक़्सर मीरा को देने की बात करती थी पर समस्या तो बनी ही थी।अब अशोकजी अपने मन में सोच रहे थे बड़ी बहू को क्या दूँ ? उनके मन के भाव को शायद बड़ी बहू ने पढ़ लिए बाबूजी,आप शायद मेरे विषय में सोच रहे हैं। आप श्रृंगारदान मीरा को और हाथ वाली घड़ी सरिता को दे दीजिए अम्मा भी तो यही चाहती थी। पर नन्दिनी,तुझे क्या दूँ समझ में नही आ रहा ? अशोकजी बोल पड़े। अभी आपके पास एक और अनमोल चीज़ है और वो अम्माजी हमेशा से मुझे ही देना चाहती थीं। सबके मुँह हैरानी से खुले के खुले रह गए। दोनों बहुऐं तो बहुत हैरान परेशान हो गईं अब कौन सा बेशकीमती पिटारा खुलेगा ? सब की हैरानी और परेशानी को भाँप कर बड़ी बहू मुस्कुराते हुए बोली,वो सबसे अनमोल तो आप स्वयं हैं बाबूजी। पिछली बार अम्माजी ने मुझसे कह दिया था,मेरे बाद बाबूजी की देखरेख तेरेजिम्मे बस अब आप उनकी इच्छा का पालन करें और हमारे साथ चलें इसी वक़्त वो भी बिना देर किए। इस से बढ़कर दिपावली का अनमोल उपहार कुछ भी नहीं हो सकता। बड़ी बहू की ये बातें सुनकर अशोकजी की आँखें नम हो गई और वहाँ मौजूद कुछ की आँखें नीची !

प्रेमनारायण वेद
इंदौर

कहानी

एक अधूरी प्रेम कहानी

राजकुमारी मीनाक्षी और कवि कानाराम की अनकही कहानी बहुत समय पहले की बात है। राजस्थान की धरती पर सूर्यगढ़ नाम का एक सुंदर राज्य हुआ करता था। वहाँ के राजा वीरेंद्र सिंह और रानी पद्मावती अपनी प्रजा का बहुत ख्याल रखते थे। राज्य में खुशहाली थी और चारों तरफ राजा-रानी के न्याय की चर्चा होती थी। राजा की एक सुंदर और समझदार बेटी थी, जिसका नाम मीनाक्षी था। मीनाक्षी जितनी सुंदर दिखने में थी, उससे कहीं ज्यादा सुंदर उसका स्वभाव था। उसकी तीन खास सहेलियाँ थीं–चंद्रिका, गौरी और राधा। चारों की दोस्ती पूरे महल में मशहूर थी। वे साथ घूमतीं, हँसतीं और अपने मन की बातें एक-दूसरे से साझा करती थीं। समय बीतता गया और मीनाक्षी की सुंदरता की चर्चा दूर-दूर तक पहुँचने लगी। एक दिन तीन अलग-अलग राज्यों के तीन राजकुमार सूर्यगढ़ पहुँचे। तीनों के मन में मीनाक्षी को अपनी जीवनसंगिनी बनाने की इच्छा थी। पहले राजकुमार ने मीनाक्षी के सामने अपने प्रेम का प्रस्ताव रखा। दूसरे ने उसे बड़े-बड़े वादे किए और तीसरे ने अपने धन और वैभव का हवाला दिया। लेकिन मीनाक्षी ने तीनों को मना कर दिया। उसने साफ शब्दों में कहा, 'प्रेम किसी के धन, दौलत या ऊँचे पद को देखकर नहीं किया जाता। और जब मन ही तैयार न हो, तो किसी रिश्ते को स्वीकार करना उचित नहीं। ' इसी राज्य में एक साधारण परिवार का लड़का रहता था, जिसका नाम कानाराम था। वह कोई राजकुमार नहीं था, न उसके पास महल थे और न ही सोने-चाँदी के खजाने। मगर उसके विचारों में एक अलग ही खूबसूरती थी। उसे लिखने-पढ़ने और कविताएँ बनाने का बहुत शौक था। एक दिन उसकी नजर मीनाक्षी पर पड़ी। बस, उसी दिन से उसके मन में एक नई कहानी जन्म लेने लगी। वह जब भी मीनाक्षी को देखता, उसके मन में कई अनकहे शब्द जन्म लेते। धीरे-धीरे उसे महसूस हुआ कि वह मीनाक्षी को पसंद करने लगा है। काफी दिनों तक उसने अपने मन की बात किसी से नहीं कही। आखिर एक दिन उसने हिम्मत जुटाई और मीनाक्षी के सामने अपने दिल की बात रख दी। उसने कहा, 'मीनाक्षी, मैं नहीं जानता कि मेरे इन शब्दों का आपके दिल पर क्या असर होगा, लेकिन इतना जरूर जानता हूँ कि आप मुझे अच्छी लगती हैं। मैं आपसे प्रेम करने लगा हूँ। मैं आप पर कोई दबाव नहीं डालना चाहता, बस अपने मन की बात कहना चाहता था। ' मीनाक्षी ने उसकी बात ध्यान से सुनी और कुछ देर बाद बोली, 'कानाराम, आपकी भावनाओं की मैं कद्र करती हूँ, लेकिन मेरे मन में आपके लिए वैसा कोई भाव नहीं है। इसलिए मैं इस रिश्ते के लिए



हाँ नहीं कह सकती। ' यह सुनकर कानाराम का मन उदास जरूर हुआ, लेकिन उसने मीनाक्षी के फैसले का सम्मान किया। उसने मुस्कुराकर कहा, 'कोई बात नहीं मीनाक्षी, हर चाहत का पूरा होना जरूरी नहीं होता। आपकी खुशी और आपका फैसला मेरे लिए महत्वपूर्ण है। ' उस दिन के बाद कानाराम ने कभी मीनाक्षी से अपने प्रेम की बात नहीं की। वह अपने काम में लग गया और अपनी कविताओं के जरिए अपने मन के भाव कागज पर उतारने लगा। लेकिन कहानी यहीं खत्म नहीं हुई थी। मीनाक्षी की एक आदत कानाराम को हमेशा सोचने पर मजबूर कर देती थी। वह जब भी कहीं से गुजरता, कभी-कभी मीनाक्षी की नजरें उसकी तरफ उठ जातीं। कई बार वह दूर से उसे देखती और फिर अपनी सहेलियों के साथ बातों में लग जाती। कानाराम यह सब देखता जरूर था, लेकिन उसने कभी उन नजरों को प्रेम का संकेत नहीं माना। आखिर किसी की नजरों का मतलब वही जान सकता है, जिसके मन में वे भाव पैदा होते हैं। एक दिन गौरी ने मीनाक्षी से पूछा, 'तुम कभी-कभी कानाराम की तरफ इतनी देर तक क्यों देखती रहती हो? ' मीनाक्षी मुस्कुराई और बोली, 'पता नहीं, शायद उसकी बातों में कुछ अलग है। वह बाकी लोगों की तरह नहीं है। उसने मुझसे अपने मन की बात कही, लेकिन मेरे मना करने के बाद कभी मुझ पर दबाव नहीं बनाया। ' उधर कानाराम की जिंदगी आगे बढ़ रही थी। उसने अपनी पहचान बनाने का फैसला कर लिया था। वह जानता था कि किसी के दिल में जगह बनाने से पहले अपनी जिंदगी में एक मुकाम बनाना जरूरी है। दिन गुजरते गए। उसकी कविताएँ धीरे-धीरे लोगों के बीच प्रसिद्ध होने लगीं। वह अपनी हर कविता में कभी प्रेम लिखता, कभी इंतजार और कभी जिंदगी की सच्चाई। एक दिन सूर्यगढ़ के राजमहल में एक बड़ा कवि सम्मेलन आयोजित हुआ। उसमें कानाराम को भी आमंत्रित किया गया। जब उसकी बारी आई, तो उसने मंच पर आकर अपनी कविता सुनाई– 'नजरों से किसी के दिल का हाल नहीं जाना करते, हर मुस्कुराते चेहरे को अपना नहीं माना करते। प्रेम में चाहत हो तो सम्मान भी होना चाहिए, किसी के इनकार को अपनी हार नहीं माना करते।

' मीनाक्षी भी वहाँ बैठी थी। उसने कानाराम की कविता सुनी और कुछ पल के लिए खामोश हो गई। उसे एहसास हुआ कि किसी इंसान की सबसे बड़ी खूबी उसका सम्मान करने का तरीका होता है। उस दिन कानाराम को लोगों की खूब प्रशंसा मिली। मगर उसके लिए सबसे बड़ी खुशी यह थी कि उसने अपनी भावनाओं को कमजोरी नहीं बनने दिया, बल्कि उन्हें अपनी ताकत बना लिया। कहते हैं कि कुछ कहानियाँ पूरी होकर भी अधूरी रह जाती हैं। हर प्रेम कहानी का अंत मिलन से हो, यह जरूरी नहीं। कुछ कहानियाँ इंसान को जिंदगी का सबसे खूबसूरत सबक सिखा जाती हैं। और कानाराम की कहानी भी ऐसी ही थी। मीनाक्षी की तरफ से जवाब आज भी वही था, लेकिन कानाराम ने अपने जीवन को उस जवाब तक सीमित नहीं रखा। क्योंकि उसने समझ लिया था कि प्रेम करना दिल का काम है, लेकिन किसी के फैसले का सम्मान करना अच्छे इंसान की पहचान है। कहानी की अंतिम पंक्तिया वो देखती रही, मैं समझता रहा, दिल में एक ख्वाब चुपचाप पलता रहा। उसने कहा नहीं, मैंने पूछा नहीं, एक अनकहा किस्सा यूँ ही चलता रहा।

न उसे पाने की जिद रही, न कोई शिकायत रही, बस उसकी खुशियों के लिए दिल में एक दुआ रही। मोहब्बत का मतलब उसे पाना ही नहीं होता, कभी किसी की खुशी में अपनी खुशी भी छिपी रही।

— कानाराम सैनी
'शब्दकार'
पता - बस्सी,जयपुर (राज.)
Mob.-8306905762

मिट्टी के दिए और प्लास्टिक के मनुष्य


व्यंग्य
अरण्यरोदन





दीपावली आने को है। हर साल की तरह इस बार भी मोहल्ले के नुक्कड़ पर वही पुरानी बहस छिड़ी है, मिट्टी का दिया जलाएँ या रंग-बिरंगी बिजली की झालर लगाएँ? घसीटे चच्चा ने बीड़ी सुलगाई और धीरे से बोले- दिया तो हम मिट्टी का ही जलाएँगे, पर अफ़सोस ये है कि अब आदमी प्लास्टिक के बन गए हैं, उन्हें कौन गलाए? चच्चा का यह वाक्य ऐसा था जैसे भीड़ पर किसी ने सच का बम फेंक दिया हो। सामने खड़े शर्मा जी ने झुँझलाकर पूछा, चच्चा, आप हर बार तंज़ में क्यों बात करते हैं? चच्चा मुस्कराए- क्योंकि सच्चाई अब सीधे बोलने से नहीं, व्यंग्य में ही पचती है। दरअसल, दीपावली अब उजाले का त्योहार नहीं रही, उजाले का प्रदर्शन बन गई है। हर गली-मोहल्ले में बिजली की झालरें ऐसे टिमटिमाती हैं जैसे आकाश से तारे किराये पर लिए गए हों। मगर इस कृत्रिम रोशनी में किसी मन का अँधेरा नहीं मिटता। मिट्टी का दिया जब जलता था तो उसमें मिट्टी की अपनी महक, अपनापन और सादगी होती थी। अब जो प्लास्टिक की झालरें जगमगाती हैं, उनमें बस बिजली का बिल और दिखावे की चमक घूमती है। घसीटे चच्चा की तंज़भरी बातों में सच्चाई की आँच है- पहले लोग दीवाली में घर साफ़ करते थे, अब बस अपनी छवि चमकाते हैं, समाज माध्यमों पर। अब दिया जलाने से ज़्यादा ज़रूरी है संदेश डालना- 'पर्यावरण-स्नेही दीवाली ', जबकि नीचे कार की डिक्की में पटाखों के डिब्बे भरे रहते हैं। शहर के हर घर में होड़ है कौन ज़्यादा सजावट करे, कौन ज़्यादा महँगे उपहार दे। दीवाली अब त्योहार नहीं, किसी नाटक के दृश्य जैसी लगती है। घसीटे चच्चा मुस्कराकर कहते हैं, अब तो भगवान गणेश भी सोच में होंगे- ये मेरे पूजन में हैं या किसी व्यापार-प्रदर्शन में? बाज़ार में देखिए, एक कोने में मिट्टी के दिए बेचता बूढ़ा कुम्हार बैठा है, जिसके हाथों की दरारों में वक्त सूख चुका है। बगल में प्लास्टिक के दीयों का ढेर लगा है, जिन पर लिखा है, 'टूट-फूट से रहित, विदेश में बना'! कुम्हार के दिए टूट सकते हैं, पर उनमें जीवन है। प्लास्टिक के दीये अमर हैं, पर निर्जीव। ठीक वैसे ही जैसे आज के लोग- टिकाऊ, चमकदार, मगर बिना एहसास के। चच्चा याद दिलाते हैं, 'हमारे ज़माने में दिया जलाना मतलब था, उजाला बाँटना। अब मतलब है – सजावट पूरी हो गई कि नहीं?' वो हँसते हैं, पर उनकी हँसी बुझी हुई-सी लगती है। रिश्ते भी अब मिट्टी के नहीं रहे, जो टूटकर भी जुड़ जाएँ। अब वे प्लास्टिक के हैं, चमकदार, टिकाऊ, मगर बिना ऊष्मा के। अब लक्ष्मी पूजन के बाद लोग ऑनलाइन दुकानों की ओर दौड़ते हैं। चच्चा तंज़ कसते हैं- 'लक्ष्मी जी भी सोचती होंगी अब मुझे कौन पूज रहा है, भक्त या ग्राहक?' मिट्टी का दिया दो मिनट में बुझ जाता है, पर उसकी लौ की गरमी दिल में उतर जाती थी। बिजली की लाइट घंटों जलती है, पर उसके नीचे कोई सुकून नहीं। हर साल हम कहते हैं, इस बार कुछ सादगी रखेंगे। पर सादगी अब किसी ख़रीदारी सूची में नहीं आती। दीपावली के बाद जब सड़कों पर टूटे प्लास्टिक के दीये, फटे उपहार-पैक और जली फुलझड़ियों के अवशेष बिखरे मिलते हैं, तो घसीटे चच्चा धीरे से कहते हैं- देखो बेटा, यही बची है हमारी दीवाली- मिट्टी के दिए हार गए, और प्लास्टिक के मनुष्य जीत गए।

वीना सिंह - लखनऊ

व्यंग्य

लौट के उल्लू घर को आया

दीवाली के बाद बड़ी बुरी अफवाह हर तरफ फैल गई थी कि उल्लू रास्ता भटक गया है।उसे लक्ष्मीजी को जहां ले जाना था वहां नहीं ले जाकर कहीं और चला गया।बताया जाता है कि इस भटकाव के पीछे उल्लू की अपनी तरफ से कोई सोची समझी साजिश नहीं थी।उल्लू बेचारे में इतनी अकल कहां कि वह लक्ष्मीजी को इंच भर भी इधर के बजाय उधर ले जाए।लिहाजा मोटे तौर पर यह माना जाने लगा कि जो हुआ वह अनायास हुआ अचानक हुआ।इसमें उल्लू का कोई हाथ नहीं। फिर भी मामला तो बेहद संगीन था जिसे



किसी भी सूरत में रंगीन नहीं माना जा सकता था वह यूं कि भटका हुआ उल्लू आज नहीं तो कल कहीं ना कहीं तो उतरेगा। आखिर कितना उड़ेगा और कब तक उड़ेगा ।उल्लू भी आखिर तनधारी प्राणी है।देह लिया है तो थकान तो महसूस होगी ,सुस्ताने की,सोने की इच्छा तो मन में होगी।कब तक भूखा प्यासा भटकता रहेगा भूख भी लगेगी ही। जाहिर है उल्लू कही तो टिकेगा, कहीं तो रुकेगा।ऐसे में चिंता फिकर की बात यह है कि ये उल्लू किसी मजदूरों,किसानों,आदिवासियों और गरीबों की बस्ती में न उतर जाए।अगर उतर गया तो बेचारी लक्ष्मी इनकी झोंपड़ियों में कैसे रह पाएगी? इनके साथ रुखा सूखा कैसे खा पाएगी? फटे पुराने चीथड़े कैसे पहन पाएगी? उल्लू का पेट्रोल मतलब झूठ,बेइमानी,भ्रष्टाचार ,शोषण और अन्याय से कमाए धन का पेट्रोल उल्लू को उन मेहनतकशों की बस्ती में कैसे मिलेगा? लक्ष्मी के प्रियजन इस चिंता से दुबले होते इसके पहले यह शुभ समाचार आ गया कि उल्लू लक्ष्मी को लेकर धनकुबेरों की तिजोरी में सही सलामत उतर गया ।सभी ने चैन की सांस लेते हुए कहा ', लौट के उल्लू घर को आए। '

रमेशचंद्र शर्मा,,,,

कहानी

हैप्पी दीवाली

मनु और लालू में जय-वीरू की मित्रता थी। दोनों कक्षा आठवीं के छात्र थे। उनके घर बिल्कुल लगे हुए तो नहीं थे; पर एक मुहल्ले में ही थे; सो कहीं भी खेलने-कूदने या आने-जाने के लिए होता तो वे इशारा से काम चला लिया करते थे यानी वे दोनों अपने-अपने घरों से ही एक-दूसरे को देख लिया करते थे। उनके घर वाले भी अक्सर निश्चित रहते थे, क्योंकि वे उन्हें कहीं न कहीं एक साथ मिल जाते थे। मनु और लालू की बहुत सी आदतें भी एक जैसी थी। पढ़ाई-लिखाई मे सामान्य थे। खेलकूद में लगभग समान थे। एक दो बातें ऐसी थी, जिनसे उनके स्वभाव में भिन्नता नजर आती थी; जैसे कि, मनु मॉडर्न ख्याल का था। बड़े शौकिन मिजाज का था। नई-नई चीजों के प्रति वह बहुत जल्दी आकर्षित हो जाता था, जबकि लालू पर गाँव-देहात का बड़ा ही असर था। गाँव की परम्परा व संस्कृति उसे बड़ी अच्छी लगती थी। आज मनु और लालू का मन डौण्डी बाजार जाने को हुआ। उन्हें पता था कि दीवाली आने वाली है। अपने-अपने मम्मी-पापा से पैसे ले लिये। वे दोनों बहुत खुश थे। बाजार पहुँचते ही उनकी नजर गोलगप्पे के ठेले पर पड़ी। दोनों ने चाट और गोलगप्पे का मजा लिया, फिर बाजार घूमने लगे। लालू ने सीताफल देख लिया। बोला - ' मनु, चल यार सीताफल खरीदते हैं; खाते हैं, मजा आएगा। ' ' अरे यार रूकना, चल अभी घूमते हैं। क्या सीता-वीता खाएगा भाई ' , मुँह बिचकाते हुए मनु बोला। फिर दोनों घूमते-घूमते बीच-बाजार में चले गये। दोनों एक-दूसरे के हाथ पकड़े हुए थे। जहाँ अंचल की वस्तुएँ दिखती, लालू रुक जाता। मनु उसे तुरंत खींच लेता। जहाँ पर मनु कोई भी चीज देखकर रूक जाता तो लालू को भी रूकना पड़ता। वे दोनों बाजार के अंतिम छोर पर पहुँच गये। वहाँ पर कुम्हार पसरा था। लालू रूक गया। कहने लगा - ' मनु भाई, देखना यार, बड़े अच्छे लग रहे हैं ये मिट्टी के खिलौने और ये छोटे-छोटे सुंदर दीये। क्या बनाया है भाई बनाने वाले ने। चल खरीदते हैं एकाध।' दोनों एक कुम्हार के पास गये। वह कुम्हार बेचारा चुपचाप बैठा था। खिलौने, मटके, मलवे , दीये आदि रखे हुए थे। कोई ग्राहक नहीं था। बोहनी तक नहीं हुई थी। बड़ा उदास लग रहा था वह। अगल-बगल के पसरे पर भीड़ थी। उसके पसरे पर कोई रुकता ही नहीं था। अपने पसरे से गुजरने वालों पर उसकी दृष्टि गुजरती और उदास लौट आती।तभी लालू ने मनु को रोकते हुए कहा - ' मनु, मैं ये खिलौने खरीदूँगा यार। मुझे अच्छे लग रहे हैं। दीये तो लूँगा ही। ' ' अरे यार भाई इसे क्या खरीदोगे



यार लालू। टूट-फूट जाएगा। मिट्टी की चीज मिट्टी में मिल जाएगी।' मनु मना करने लगा। ' नहीं... भाई लूँगा ही...' , कहते हुए लालू ने दो-तीन खिलौने और एक दर्जन दीये भी खरीद लिया। ' तेरी भी हद हो गयी यार...' , कहते हुए मनु लालू को उसके सामान को बैग के अंदर रखने में मदद करने लगा। अब बाजार से लौटने की बारी आई। इस बार मनु लालू से कहने लगा - ' जरा रूक तो भाई। ' उसकी नजर इलेक्ट्रॉनिक सामान पर थी। दुकान में रखे रंगीन बल्ब, झालर, और डिस्को लाईट देख लिया। खरीदने का मन हुआ मनु का ; और.फटाफट खरीद भी लिया। बहुत खुश था वह। इस तरह घूम-घूमकर मनु और लालू त्यौहारी-बाजार का मजा ले रहे थे। अब उन्हें कुछ नहीं खरीदना था। बाकी सामान जैसे-कपड़ा-लत्ता, और पटाखा वगैरह उनके मम्मी-पापा की जिम्मेदारी थी। शाम भी होने वाली थी। वे घर लौटने लगे। प्रकाशपर्व दीवाली आई। तीसरा दिन था; यानी आज लक्ष्मीपूजन दिवस। सुरडोंगर गाँव में त्यौहार का हर्षोल्लास देखते ही बनता था। सारा गाँव जगमगा रहा था। गाँवभर हलचल थी। लोग खुश थे; और होने भी चाहिए, फसल जो ठीक-ठाक थी। सभी एक-दूसरे को शुभकामनाएँ दे रहे थे। युवावर्ग अपने में मस्त थे। औरतों में मीठी मुस्कान; और आवाज में खनक थी। बच्चे पटाखे व फुलझड़ी चलाने में व्यस्त थे। सब अपने-अपने घरों में लक्ष्मी-पूजा की तैयारी कर रहे थे। पूजा-ठौर व दरवाजे पर दीये रख रहे थे। बच्चों को बड़ा मजा आ रहा था। लालू भी प्रसन्नतापूर्वक बाजार से खरीदे मिट्टी के दीये को जला-जलाकर घर भर रख रहा था। इसी तरह मनु भी अपने घर में अपने खरीदे इलेक्ट्रॉनिक सामान को अपनी शिखा दीदी के साथ लगाने-सजाने में लगा हुआ था। अचानक पूरे घर भर अंधेरा छा गया।

अंत में पता चला कि रंगीन बल्ब व झालर लगाते वक्त किसी वायर के गलत कनेक्ट होने से शॉर्ट-सर्किट हो गया और बिजली चली गयी। बहुत प्रयास किये बनाने का; पर सब व्यर्थ। बल्ब-झालर लगाने के चक्कर में मनु के साथ शिखा को भी पापा से मुफ्त में झिड़की सुनने को मिली।

फिर पापा के कहने पर मम्मी के साथ शिखा और मनु मिट्टी के दीये जलाने में लग गये। इसी बीच मम्मी को बाहर से दरवाजे खटखटाने की आवाज़ सुनाई दी। मनु को जाकर देखने के लिए कहा। मनु ने जाकर देखा। थाल भर दीये रखा लालू खड़ा था। दीये में तेल-बाती भी लगी हुई थी। लालू बोला - ' मनु, मैंने अपने दरवाजे से देख लिया कि तुम्हारे घर की लाईट चली गयी है। मुझे अंधेरा ही अंधेरा दिखा। बाहर भी दीये नहीं जल रहे हैं। इसलिए मैं ये दीये ले आया । फिर मनु लालू को घर के अंदर ले आया। मनु और शिखा के मम्मी व पापा को देख कर खुश हो गये।

मम्मी-पापा के कहे अनुसार मनु, शिखा व लालू जलते दीये को एक-एक करके अपनी मनपसंद जगहों पर रखने लगें; तभी मनु को बाजार वाली घटना, कुम्हार वाली बात, लालू का दीये खरीदना व उसे मना करना और मंहगे-मंहगे इलेक्ट्रॉनिक सामान खरीदना सब याद आ रहे थे। लालू के, ' हैप्पी दीवाली मनु...! ' कहने पर मनु की तंद्रा भंग हुई। ' हैप्पी दीवाली टू यू लालू भाई..! ' कहते हुए मनु ने लालू के हाथ को अपने हाथों में ले लिया. यह सब देख शिखा दीदी व मम्मी-पापा बहुत खुश थे।

टीकेश्वर सिन्हा '
गब्दीवाला'